Hari Shabd Roop Chart

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	हरिः	हरी	हरयः
द्वितीया	हरिम्	हरी	हरीन्
तृतीया	हरिणा	हरिभ्याम्	हरिभिः
चतुर्थी	हरये	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
पंचमी	हर्याः	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
षष्ठी	हर्याः	हर्योः	हरिणाम्
सप्तमी	हरौ	हर्योः	हरिषु
संबोधन	हे हरि	हे हरी	हे हरयः

SHABD ROOP

हरि शब्द रूप का हिंदी अर्थ

विभक्ति	एकवचन (अर्थ)	द्विवचन (अर्थ)	बहुवचन (अर्थ)
प्रथमा	हरिः (हरि, हरि ने)	हरी (दो हरि, दो हरि ने)	हरयः (अनेक हरि, अनेक हरि ने)
द्वितीया	हरिम् (हरि को)	हरी (दो हरि को)	हरीन् (अनेक हरि को)
तृतीया	हरिणा (हरि से, हरि के द्वारा)	हरिभ्याम् (दो हरि से, दो हरि के द्वारा)	हरिभिः (अनेक हरि से, अनेक हरि के द्वारा)
चतुर्थी	हरये (हरि को, हरि के लिए)	हरिभ्याम् (दो हरि को, दो हरि के लिए)	हरिभ्यः (अनेक हरि को, अनेक हरि के लिए)
पञ्चमी	हरितः (हरि से)	हरिभ्याम् (दो हरि से)	हरिभ्यः (अनेक हरि से)
षष्ठी	हर्यः / हरेः (हरि का, हरि की)	हर्योः (दो हरि का, दो हरि की)	हरीणाम् (अनेक हरि का, अनेक हरि की)
सप्तमी	हरौ (हरि में, हरि पर)	हर्योः (दो हरि में, दो हरि पर)	हरिषु (अनेक हरि में, अनेक हरि पर)
सम्बोधन	हे हरि! (हे हरि!)	हे हरी! (हे दो हरि!)	हे हरयः! (हे अनेक हरि!)

हरी शब्द से बनने वाले वाक्य **(**संस्कृत में हिंदी अर्थ सहित**)**

यहाँ प्रत्येक विभक्ति और वचन के अनुसार ‘हरी’ शब्द के उदाहरण वाक्य दिए गए हैं, जो आपको व्याकरणिक प्रयोग समझने में मदद करेंगे:

प्रथमा विभक्ति (कर्ता कारक)

- एकवचन: हरीं शरणं गच्छति। (हरी शरण में जाता है।)
- द्विवचन: हरिवयोः युद्धे विजयं प्राप्यते। (दो हरियों के युद्ध में विजय प्राप्त होती है।)
- बहुवचन: हरयः पृथ्वीं रक्षन्ति। (हरे पृथ्वी की रक्षा करते हैं।)

द्वितीया विभक्ति (कर्म कारक)

- एकवचन: हरिम् तपसा पूजयति। (वह हरी की पूजा तप द्वारा करता है।)
- द्विवचन: हरिवयोः वस्त्राणि विक्रयन्ते। (दो हरियों के वस्त्र बिकते हैं।)
- बहुवचन: हरयः वनं पालयन्ति। (हरे वन की रक्षा करते हैं।)

तृतीया विभक्ति (करण कारक)

- एकवचन: हरिणा वनं सुरभितं भवति। (हरी से वन सुरभित होता है।)
- द्विवचन: हरिभ्याम् सन्तोषः प्राप्तः। (दो हरियों से सुख की प्राप्ति होती है।)
- बहुवचन: हरिभिः पृथिव्यां सुखं सम्राज्यं लभते। (हरे पृथ्वी पर सुख और सम्राज्य प्राप्त करते हैं।)

चतुर्थी विभक्ति (सम्प्रदान कारक)

Hari Shabd Roop

- एकवचन: हराय देवः दर्शनं ददाति। (देव हरी को दर्शन देते हैं।)
- द्विवचन: हरिभ्याम् भक्तिराजं अर्प्यते। (दो हरियों को भक्ति अर्पित की जाती है।)
- बहुवचन: हरिभ्यः पुण्यं समर्पितं भवति। (हरे को पुण्य समर्पित किया जाता है।)

पंचमी विभक्ति (अपादान कारक)

- एकवचन: हरिणा भूमि संरक्षितं अस्ति। (हरी से भूमि संरक्षित है।)
- द्विवचन: हरिभ्याम् पर्वतं समृद्धं भवति। (दो हरियों से पर्वत समृद्ध होता है।)
- बहुवचन: हरिभ्यः जलं उपलभ्यते। (हरे से जल प्राप्त होता है।)

षष्ठी विभक्ति (सम्बन्ध कारक)

- एकवचन: हरिणां रुपं नयनार्थम्। (हिरण के रूप को देखने के लिए।)
- द्विवचन: हरिवयोः रूपं दिव्यं अस्ति। (दो हरियों का रूप दिव्य है।)
- बहुवचन: हरिणां रूपं अद्वितीयं। (हिरणों का रूप अद्वितीय है।)

सप्तमी विभक्ति (अधिकरण कारक)

- एकवचन: हरिणा सह युद्धे जयः प्राप्तः। (हरी के साथ युद्ध में विजय प्राप्त हुई।)
- द्विवचन: हरिवयोः स्नेहं समर्पयत। (दो हरियों के प्रेम को समर्पित करो।)
- बहुवचन: हरयः युद्धे उत्कृष्टता प्राप्तयन्ति। (हरे युद्ध में उत्कृष्टता प्राप्त करते हैं।)

सम्बोधन (विस्मय कारक)

- एकवचन: हे हरे! शरणं गच्छ। (हे हरी! शरण में जाओ।)
- द्विवचन: हे हरिवयो! संघर्षं कर्तव्यम्। (हे दो हरे! संघर्ष करो।)
- बहुवचन: हे हरयः! युद्धे जयम् प्राप्तताम्। (हे हरे! युद्ध में विजय प्राप्त करो।)

Best of Luck

www.roopshabd.com